श्री नेमिनाथ विधान

माण्डला

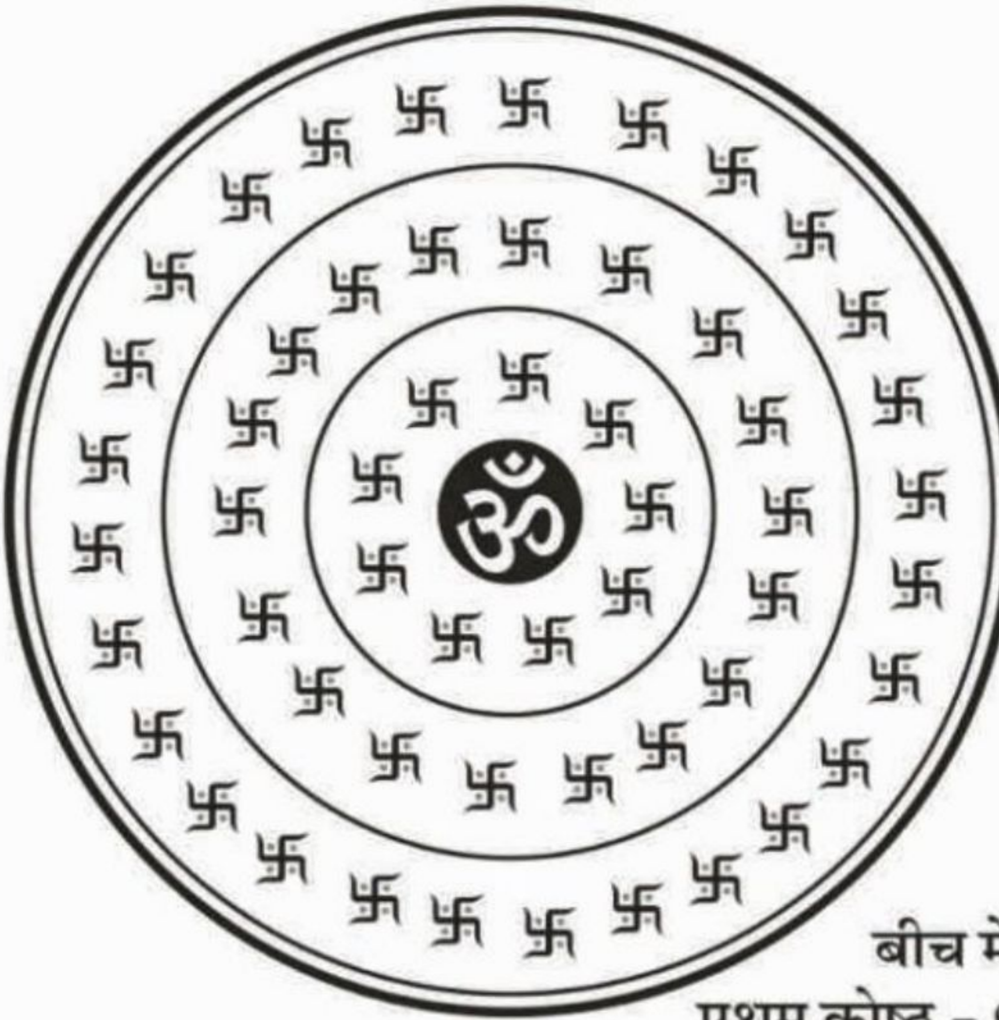

बीच में – ॐ
प्रथम कोष्ठ – 9 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठ – 18 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठ – 27 अर्घ्य
कुल – 54 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

श्री नेमिनाथ स्तवन

दशचापसमुत्सेधः, सहस्राब्दायुरन्वितः।
सिद्धिकांतापतिर्नेमिः, मे स्यात् सवार्थ सिद्धये।।1।।

अनित्यो हि जीवस्तथा नित्य एव।
क्रिया तर्हिं मुक्त्यै न कस्यापि भूयात्।।
कथंचित्तव न्यायशैलीं श्रितानां।
त्वरं त्वत्पदं स्यान्न मिथ्यादृशां तत्।।2।।

रविर्व्याप्तभूमंडलोंऽशुप्रसारैः।
जगत्तापकृच् - चन्द्रमास्तापहृच्च।।
यमातापहृच् - नेमिनाथास्त्वमेव।
ऋषीणां सदः कैरवोत्फुल्लताकृत्।।3।।

शरीरेन्द्रियाद्या धराभूपराद्याः।
कृता बुद्धिमद्धेतुका सद्मवत् स्युः।।
प्रसाध्येत कार्यत्वतःसृष्टिकर्त्ता।
न तच्चारु यद्विश्व-माद्यंतशून्यं।।4।।

कलैकापि कालस्य न त्वद्विना स्यात्।
विभो! कालचक्राद्विमुक्तस्त्वमेव।।
कलासर्वपूर्णस्त्रिालोकैकचंद्रः।
मया स्तूयसे निष्कलः क्षीरवर्णः।।5।।

नेमिनाथं जिनं नत्वा, शिवादेवि सुतंवरं।
पश्वाक्रन्दनंपश्यंतु विशद तपःधारिणः।।6।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री नेमिनाथ विधान

स्थापना

दोहा- धर्म ध्वज धारे प्रभू, नेमिनाथ भगवान।
महिमा गाने आपकी, करते हैं आह्वान।।
गुण अतिशय हैं आपके, महिमा का ना पार।
अर्चा करते आपकी, अनुपम मंगलकार।।

ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(पाइता छन्द)

जल हम यह प्रासुक लाए, शिव सुख पाने को आए।
हम नेमिनाथ को ध्याएँ, जिन गुण गाके हर्षाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव ताप नशाने आए, शुभ गंध चढ़ाने लाए।
हम नेमिनाथ को ध्याएँ, जिन गुण गाके हर्षाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद हम भी पाएँ, अक्षत यह चरण चढ़ाएँ।
हम नेमिनाथ को ध्याएँ, जिन गुण गाके हर्षाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम काम रोग विनशाएँ, यह पुष्प चढ़ा हर्षाएँ।
हम नेमिनाथ को ध्याएँ, जिन गुण गाके हर्षाएँ।।4।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
हम क्षुधा से मुक्ती पाएँ, शुभ चरु से पूज रचाएँ।
हम नेमिनाथ को ध्याएँ, जिन गुण गाके हर्षाएँ।।5।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हम मोह से मुक्ती पाएँ, प्रजलित शुभ दीप चढ़ाएँ।
हम नेमिनाथ को ध्याएँ, जिन गुण गाके हर्षाएँ।।6।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
कर्मों से मुक्ती पाएँ, अग्नी में धूप जलाएँ।
हम नेमिनाथ को ध्याएँ, जिन गुण गाके हर्षाएँ।।7।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
हम मोक्ष महाफल पाएँ, फल चरणों सरस चढ़ाएँ।
हम नेमिनाथ को ध्याएँ, जिन गुण गाके हर्षाएँ।।8।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ, पद पावन अर्घ्य चढ़ाएँ।
हम नेमिनाथ को ध्याएँ, जिन गुण गाके हर्षाएँ।।9।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – शांती धारा दे रहे, लेकर पावन नीर।
यही कामना है विशद, पाएँ भव का तीर।।
(शान्तये शान्तीधारा)

दोहा – पाएँ पद अविकार हम, पाए जो तीर्थेश।
पुष्पांजलि करते चरण, भक्ति सहित विशेष।।
(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(चाल छन्द)

भूलोक पूर्ण हर्षाया, गर्भागम प्रभु ने पाया।
कार्तिक सुदि षष्ठी पाए, प्रभु स्वर्ग से चयकर आए।।1।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ल षष्ठ्याँ गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी स्वामी, जन्मे जिन अन्तर्यामी।
भू पे छाई उजियारी, पा दिव्य दिवाकर लाली।।2।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ल षष्ठ्याँ जन्म कल्याणक प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी गाई, नेमी जिन दीक्षा पाई।
बाड़े में पशु रंभाएँ, उनके बन्धन खुलवाए।।3।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ल षष्ठ्याँ तप कल्याणक प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश्विन सुदि एकम जानो, प्रभु ज्ञान जगाए मानो।
शिव पथ की राह दिखाए, जीवों को अभय दिलाए।।4।।

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ल एकम केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठें आषाढ़ सुदि गाई, भव से प्रभु मुक्ती पाई।
नश्वर शरीर यह छोड़े, कर्मों के बन्धन तोड़े।।5।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ल अष्टयां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – जिन अर्चा जो भी करें, वे हों मालामाल।
नेमिनाथ भगवान की, महिमा बड़ी विशाल।।

तर्ज – करम के खेल कैसे........

करम के खेल कैसे हैं, नहीं हम जान पाते हैं।
मिले संसार से मुक्ती, अतःपूजा रचाते हैं।।टेक।।
स्वर्ग अपराजित से चयकर, गर्भ में माँ के प्रभु आए।
शौरीपुर में प्रभु जन्में, हर्ष त्रय लोक में छाए।।
इन्द्र मेरू पे ले जाके, न्हवन प्रभु का कराते हैं।।
मिले संसार....।।1।।
जन्म से आपके जग में, धन्य शुभ हो गया यदुकुल।
नेमि जी दूल्हा बनकर के, ब्याहने को चले राजुल।।
बँधे बाड़े में हो व्याकुल, पशू दुख में रंभाते हैं।
मिले संसार....।।2।।
देख पशुओं की पीड़ा को, नेमि करुणा से भर आते।
धार वैराग्य अन्तर में, सुगिरि गिरनार को जाते।।

बनी दुल्हन हुई व्याकुल, नेमि जब वन को जाते हैं।।
मिले संसार...।।3।।
गई समझाने को राजुल, नाथ ! वन को नहीं जाओ।
प्रीति नौ भव की तोड़ी क्यों, राज हमको ये बतलाओ।।
सार संसार में नाहीं, अतः संयम को पाते हैं।।
मिले संसार...।।4।।
कर्म घाती प्रभु नाशे, ज्ञान केवल जगाया है।
सुगिरि गिरनार से प्रभु ने, सुपद निर्वाण पाया है।।
जिनालय में प्रभू राजें, महत् अतिशय दिखाते हैं।।
मिले संसार....।।5।।

दोहा - जिन मंदिर में नेमि की, महिमा का ना पार।
अर्चा करें जो भाव से, होवें भव से पार।।

ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - चेतन से सब भिन्न हैं, तन मन धन गृह ग्राम।
सत्य विशद यह जानिए, यही श्रेष्ठ है काम।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

प्रथम वलयः

दोहा - क्षायिक पाए लब्धियाँ, कर्म घातिया नाश।
स्व पर उपकारी बने, कीन्हे शिवपुर वास।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

क्षायिक नव लब्धियों के अर्घ्य

(चाल छन्द)

क्षायिक 'सम्यक्त्व' जगाए, जो मोक्षमार्ग अपनाए।
हम नेमिनाथ को ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं क्षायिक सम्यक्त्व लब्धी प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक 'चारित' के धारी, जो हुए कर्म विनिवारी।
हम नेमिनाथ को ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं क्षायिक चारित लब्धी प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु क्षायिक 'ज्ञान' जगाए, निज घाती कर्म नशाए।
हम नेमिनाथ को ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं क्षायिक ज्ञान लब्धी प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन क्षायक 'दर्शन' पाए, जो कर्मावरण नशाए।
हम नेमिनाथ को ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं क्षायिक दर्शन लब्धी प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं क्षायक 'दान' के धारी, जन-जन के करुणाकारी।
हम नेमिनाथ को ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं क्षायिक दान लब्धी प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु क्षायक 'लाभ' को पाए, जो अन्तराय विनशाए।
हम नेमिनाथ को ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं क्षायिक लाभ लब्धी प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन भोगान्तराय नशाए, प्रभु क्षायक 'भोग' जगाए।
हम नेमिनाथ को ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं क्षायिक भोग लब्धी प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायक 'उपभोग' के धारी, प्रभु हैं पावन उपकारी।
हम नेमिनाथ को ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं क्षायिक उपभोग लब्धी प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु वीर्यान्तराय नशाए, क्षायक 'वीर्यत्व' जगाए।
हम नेमिनाथ को ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं क्षायिक वीर्य लब्धी प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

प्रभु 'नव लब्धी' प्रगटाये, अर्हन्त अवस्था पाये।
हम नेमिनाथ को ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते।।10।।

ॐ ह्रीं क्षायिक नव लब्धी प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा – दोष अठारह से रहित, नेमिनाथ भगवान।
भाव सहित जिनका यहाँ, करते हम गुणगान।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अष्टादश दोष विरहित जिन के अर्घ्य

जो "क्षुधा" दोष को पाए, वह भारी कष्ट उठाए।
प्रभु हैं यह दोष निवारी, अर्हत् पदवी के धारी।।1।।

ॐ ह्रीं क्षुधा दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो "तृषा" दोष धर गाए, वह दुखमय जीवन पाए।
प्रभु हैं यह दोष निवारी, अर्हत् पदवी के धारी।।2।।

ॐ ह्रीं तृषा दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'जन्म' दोष के धारी, दुख पाए भव-भव भारी।
प्रभु हैं यह दोष निवारी, अर्हत् पदवी के धारी।।3।।

ॐ ह्रीं जन्म दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'जरा' दोष को पाते, लाचार स्वयं हो जाते।
प्रभु हैं यह दोष निवारी, अर्हत् पदवी के धारी।।4।।

ॐ ह्रीं जरा दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो होते 'विस्मयकारी', दुख पाएँ जिन्दगी सारी।
प्रभु हैं यह दोष निवारी, अर्हत् पदवी के धारी।।5।।

ॐ ह्रीं विस्मय दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'अरति' दोष उर लावें, न चैन कहीं वे पावें।
प्रभु हैं यह दोष निवारी, अर्हत् पदवी के धारी।।6।।

ॐ ह्रीं अरति दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोई 'खेद' करें अज्ञानी, भव भ्रमण की रही निशानी।
प्रभु हैं यह दोष निवारी, अर्हत् पदवी के धारी।।7।।

ॐ ह्रीं खेद दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'रोग' दोष भयकारी, जिससे हो जीव दुखारी।
प्रभु हैं यह दोष निवारी, अर्हत् पदवी के धारी।।8।।

ॐ ह्रीं रोग दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'शोक' हृदय में लावें, वे शांती कहीं ना पावें।
प्रभु हैं यह दोष निवारी, अर्हत् पदवी के धारी।।9।।

ॐ ह्रीं शोक दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मद' से जो हों मतवारे, पावें न कहीं सहारे।
प्रभु हैं यह दोष निवारी, अर्हत् पदवी के धारी।।10।।

ॐ ह्रीं मद दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

'मोह' दोष के नाशी गाए, चतुर्गति में भ्रमण कराए।
रहे दोष के प्रभु परिहारी, तीर्थंकर जिन हैं अविकारी।।11।।

ॐ ह्रीं मोह दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भय' से होते जो भयकारी, होते रहते सदा दुखारी।
रहे दोष के प्रभु परिहारी, तीर्थंकर जिन हैं अविकारी।।12।।
ॐ ह्रीं भय दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'निद्रा' से जो होंय प्रमादी, करते वे निज की बरबादी।
रहे दोष के प्रभु परिहारी, तीर्थंकर जिन हैं अविकारी।।13।।
ॐ ह्रीं निद्रा दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'चिन्ता' भाई चिता कहाए, सद् गुण निज के पूर्ण नशाए।
रहे दोष के प्रभु परिहारी, तीर्थंकर जिन हैं अविकारी।।14।।
ॐ ह्रीं चिन्ता दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'स्वेद' देह में पीड़ाकारी, बहे निरन्तर दुख हो भारी।
रहे दोष के प्रभु परिहारी, तीर्थंकर जिन हैं अविकारी।।15।।
ॐ ह्रीं स्वेद दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'राग' आग सम जानो भाई, फैली जिसकी जग प्रभुताई।
रहे दोष के प्रभु परिहारी, तीर्थंकर जिन हैं अविकारी।।16।।
ॐ ह्रीं राग दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मन में जिसके 'द्वेष' समाए, पर को भारी जीव सताए।
रहे दोष के प्रभु परिहारी, तीर्थंकर जिन हैं अविकारी।।17।।
ॐ ह्रीं द्वेष दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'मरण' दोष के हैं जो नाशी, वे होते हैं शिवपुर वासी।
रहे दोष के प्रभु परिहारी, तीर्थंकर जिन हैं अविकारी।।18।।
ॐ ह्रीं मरण दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टादश यह दोष बताए, जो संसार के कारण गाए।
रहे दोष के प्रभु परिहारी, तीर्थंकर जिन हैं अविकारी।19।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा – सर्व परिग्रह से रहित, तीनों योग निवार।
किए कर्म की निर्जरा, पाये शिव उपहार।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

परिग्रह एवं योग निवारक

चौपाई

'मिथ्याभाव' जगावें प्राणी, वे ना होते सत् श्रद्धानी।
होते जो मिथ्यातम नाशी, वे हो जाते शिवपुर वासी।।1।।

ॐ ह्रीं मिथ्यात्व परिग्रह रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्रोध' कषाय को पूर्ण नशाएँ, वे पावन शिव पदवी पायें।
होते जो मिथ्यातम नाशी, वे हो जाते शिवपुर वासी।।2।।

ॐ ह्रीं क्रोध कषाय रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'मान' से हो जाते जो मानी, जग में स्वयं उठावें हानी।
होते जो मिथ्यातम नाशी, वे हो जाते शिवपुर वासी।।3।।

ॐ ह्रीं मान कषाय रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते हैं जो 'मायाचारी', दुख सहते हैं वे भी भारी।
होते जो मिथ्यातम नाशी, वे हो जाते शिवपुर वासी।।4।।

ॐ ह्रीं मायाचारी कषाय रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'लोभ' करें जो जग के प्राणी, दुखी रहें कहती जिनवाणी।
होते जो मिथ्यातम नाशी, वे हो जाते शिवपुर वासी।।5।।

ॐ ह्रीं लोभ कषाय रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

नौ कषाए

(मोतियादाम छन्द)

करें जो प्राणी 'हास्य' कषाय, चतुर्गति में जो भ्रमण कराय।
करें इसका जो भी परिहार, प्राप्त वे करें मोक्ष का द्वार।।6।।

ॐ ह्रीं हास्य कषाय रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

जीव जो होते हैं रति वान, करें ना निज आतम कल्याण।
करें इसका जो भी परिहार, प्राप्त वे करें मोक्ष का द्वार।।7।।

ॐ ह्रीं रति कषाय रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

'अरति' का जिनके मन में वास, करें निज गुण वे स्वयं विनाश।
करें इसका जो भी परिहार, प्राप्त वे करें मोक्ष का द्वार।।8।।

ॐ ह्रीं अरति कषाय रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

'शोक' जो करते जग के जीव, कर्म का करते बन्ध अतीव।
करें इसका जो भी परिहार, प्राप्त वे करें मोक्ष का द्वार।।9।।
ॐ ह्रीं शोक कषाय रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
जीव जो रहते हैं 'भयभीत', रहें ना उनके कोई मीत।
करें इसका जो भी परिहार, प्राप्त वे करें मोक्ष का द्वार।।10।।
ॐ ह्रीं भय कषाय रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
रहें जो जीव 'जुगुप्सा' वान, कभी ना कर पावें कल्याण।
करें इसका जो भी परिहार, प्राप्त वे करें मोक्ष का द्वार।।11।।
ॐ ह्रीं जुगुप्सा कषाय रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।
रहा जो 'स्त्री वेदी' जीव, मोक्ष की पावें ना वे नींव।
करें इसका जो भी परिहार, प्राप्त वे करें मोक्ष का द्वार।।12।।
ॐ ह्रीं स्त्रीवेद कषाय रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।
वेद 'पुल्लिंग' पा करते पाप, भ्रमण ना मैट सकें वे आप।
करें इसका जो भी परिहार, प्राप्त वे करें मोक्ष का द्वार।।13।।
ॐ ह्रीं पुल्लिंगवेद कषाय रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।
'नपुंसक' पाते हैं जो वेद, भोग में रत हो करते खेद।
करें इसका जो भी परिहार, प्राप्त वे करें मोक्ष का द्वार।।14।।
ॐ ह्रीं नपुंसकवेद कषाय रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्य परिग्रह

(चौपाई)

'क्षेत्र' परिग्रह जो भी पाएँ, चिंतित हो कई दुःख उठाएँ।
सर्व परिग्रह के परिहारी, होते विशद ज्ञान के धारी।।15।।

ॐ ह्रीं क्षेत्र परिग्रह रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वास्तु' परिग्रह जो भी पाते, दुखी निरन्तर वे हो जाते।
सर्व परिग्रह के परिहारी, होते विशद ज्ञान के धारी।।16।।

ॐ ह्रीं वास्तु परिग्रह रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

होते 'स्वर्ण' परिग्रह धारी, चोरों से रहते भयकारी।
सर्व परिग्रह के परिहारी, होते विशद ज्ञान के धारी।।17।।

ॐ ह्रीं स्वर्ण परिग्रह रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'चाँदी' की जो आस लगाएँ, उसकी चिंता में दुख पाएँ।
सर्व परिग्रह के परिहारी, होते विशद ज्ञान के धारी।।18।।

ॐ ह्रीं रजत परिग्रह रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'धन' परिजन धर जगत भ्रमाते, पाकर चैन कहीं ना पाते।
सर्व परिग्रह के परिहारी, होते विशद ज्ञान के धारी।।19।।

ॐ ह्रीं धन परिग्रह रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'धान्य' परिग्रह पाते भाई, जिसकी चिंता है दुखदायी।
सर्व परिग्रह के परिहारी, होते विशद ज्ञान के धारी।।20।।

ॐ ह्रीं धान्य परिग्रह रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सेवा हेतू 'दास' बुलाए, जिसकी चिन्ता बहुत सताए।
सर्व परिग्रह के परिहारी, होते विशद ज्ञान के धारी।।21।।
ॐ ह्रीं दास परिग्रह रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
होते 'दासी' परिग्रह धारी,उनसे दुखी होय लाचारी।
सर्व परिग्रह के परिहारी, होते विशद ज्ञान के धारी।।22।।
ॐ ह्रीं दासी परिग्रह रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
जोड़े कपड़े अतिशय भारी, 'कुप्य' परिग्रह के हों धारी।
सर्व परिग्रह के परिहारी, होते विशद ज्ञान के धारी।।23।।
ॐ ह्रीं कुप्य परिग्रह रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
बर्तन भाड़े खूब मंगाएँ, 'भाण्ड' परिग्रह धर कहलाएँ।
सर्व परिग्रह के परिहारी, होते विशद ज्ञान के धारी।।24।।
ॐ ह्रीं भाण्ड परिग्रह रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चाल-छन्द)

हो 'मनोयोग' विनिवारी, प्रभु मन गुप्ती के धारी।
हम नेमिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।25।।
ॐ ह्रीं मनयोग रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
प्रभु 'वचनयोग' विनशाएँ, शुभ वचन गुप्ति प्रगटाएँ।
हम नेमिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।26।।
ॐ ह्रीं वचनयोग रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
प्रभु 'काययोग' परिहारी, हों काय गुप्ति के धारी।
हम नेमिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।27।।
ॐ ह्रीं काययोग रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चौपाई)

बाह्य परिग्रह दस बतलाए, अन्तरंग चौदह भी गाए।
त्रय योगों के प्रभु परिहारी, गाये विशद ज्ञान के धारी।।28।।

ॐ ह्रीं अन्तरंग बहिरंग परिग्रह एवं त्रययोग रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः मम सर्व कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा – नेमिनाथ भगवान हैं, गुण अनन्त की खान।
भाव सहित गुणगान कर, करूँ प्रभु का ध्यान।।

(चामर-छन्द)

नेमि जिन के दर्श से, यह कमाल हो गया।
अर्च के पादारविन्द, मैं निहाल हो गया।।
धन्य यह घड़ी हुई है, धन्य जन्म हो गया।
धन्य नेत्र हो गये हैं, धन्य शीश हो गया।।1।।
पूज्य नाथ आप हैं, मैं पुजारी हो गया।
देशना से आपकी, मोह दूर हो गया।।
धन्य आत्म तत्त्व का, ज्ञान प्राप्त हो गया।
मोह व मिथ्यात्व नाथ, आज मेरा खो गया।।2।।
आत्मा अनन्त है, अनन्त दीप्तिमंत है।
गुण अनन्त की निधान, आत्म कीर्तिमंत है।।

आत्म ज्ञान ध्यान से, सर्व कर्म नाश हो।
एक आत्म ज्ञान से, राग का विनाश हो।।3।।
नाथ! तव पादार विन्द, एक ही है चाहना।
मोक्ष मार्ग प्राप्त हो, और कोई चाह ना।।
कर रहे हैं आप से, नाथ! यही प्रार्थना।
कर विधान आप की, कर रहे हम अर्चना।।4।।
बार-बार हाथ जोड़, कर रहे हम वन्दना।
अष्ट कर्म का प्रभु, होय मेरे बन्ध ना।।
हे जिनेन्द्र देव! शीघ्र, पूर्ण मेरी आश हो।
मोक्ष महल में जिनेश !, अब मेरा निवास हो।।5।।

दोहा - नेमिनाथ भगवान का, किया 'विशद' गुणगान।
यही भावना मम रही, पावें पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - पूजा की है भाव से, अष्ट द्रव्य के साथ।
पूरी होवे कामना, झुका रहा मैं माथ।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री नेमिनाथ चालीसा

दोहा - अरहंतादिक देव नव, का करके शुभ जाप।
चालीसा पढ़ते विशद, कट जाएँ सब पाप।।

(चौपाई)

जय जय नेमिनाथ जिन स्वामी, करुणाकर हे अन्तर्यामी।।1।।
अपराजित से चयकर आए, शौरीपुर नगरी शुभ पाए।।2।।
कार्तिक शुक्ला षष्ठी जानो, गर्भ कल्याणक प्रभु का मानो।।3।।
राजा समुद्र विजय के प्यारे, शिवा देवी के राज दुलारे।।4।।
श्रावण शुक्ला षष्ठी स्वामी, जन्म लिए प्रभु अन्तर्यामी।।5।।
अनहद बाजे देव बजाए, सुर नर पशु भारी हर्षाए।।6।।
इन्द्र स्वर्ग से चलकर आया, पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया।।7।।
शंख चिन्ह पग में शुभ गाया, नेमिनाथ सुर नाम बताया।।8।।
आयु सहस्त्र वर्ष की पाई, चालिस हाथ रही ऊँचाई।।9।।
श्याम वर्ण तन का शुभकारी, प्रभुजी पाए मंगलकारी।।10।।
पैर की उँगली से जिन स्वामी, चक्र चलाए शिवपथ गामी।।11।।
नाक के स्वर से शंख बजाया, जिससे तीन लोक थर्राया।।12।।
कृष्ण तभी मन में घबड़ाए, शादी की तब बात चलाए।।13।।
जूनागढ़ की राजकुमारी, नाम रहा राजुल सुकुमारी।।14।।
हुई ब्याह की तब तैय्यारी, हर्षित थे सारे नर-नारी।।15।।
श्रीकृष्ण तब युक्ति लगाए, मांसाहारी नृप बुलवाए।।16।।
समुद्र विजय अति हर्ष मनाए, ले बरात जूनागढ़ आए।।17।।
नेमिनाथ दुल्हा बन आए, छप्पन कोटि बराती लाए।।18।।
बाड़े में जब पशू रंभाए, करुणा से नेमी भर आए।।19।।
पूछा क्यों ये पशू बंधाएँ, श्री कृष्ण यह बात सुनाए।।20।।
इन पशुओं का माँस पकेगा, इन लोगों को हर्ष मनेगा।।21।।
नेमिनाथ का मन घबड़ाया, करुणा भाव हृदय में छाया।।22।।

उनके मन वैराग्य समाया, पशुओं का बन्धन खुलवाया।।23।।
रथ को मोड़ चले गिरनारी, मन से होकर के अविकारी।।24।।
कंगन तोड़े वस्त्र उतारे, नेमीश्वर जी दीक्षा धारे।।25।।
मन में परिजन दुःख मनाए, नेमि कुँवर को सब समझाए।।26।।
राजुल सुनकर के घबड़ाई, दौड़ प्रभू के चरणों आई।।27।।
उसने भी प्रभु को समझाया, नहिं माने तो साथ निभाया।।28।।
केश लुंचकर दीक्षा पाई, बनी आर्यिका राजुल भाई।।29।।
श्रावण शुक्ला षष्ठी पाए, प्रभुजी संयम को अपनाए।।30।।
एक सहस नृप दीक्षा धारे, द्वारावति में लिए अहारे।।31।।
श्रावण सुदि नौमी दिन गाया, वरदत्त ने ये अवसर पाया।।32।।
आश्विन सुदि एकम को स्वामी, केवलज्ञान पाए जग नामी।।33।।
समवशरण तव देव रचाए, प्रभू की जय जयकार लगाए।।34।।
ग्यारह गणधर प्रभु के गाए, गणधर प्रथम वरदत्त कहाए।।35।।
चित्रा शुभ नक्षत्र बताया, मेघश्रृंग तरु का तल पाया।।36।।
सर्वाह्ण यक्ष प्रभू का भाई, यक्षी कुष्मांडनी कहलाई।।37।।
ऋषी अठारह सहस बताए, चार सौ पूरब धारी गाए।।38।।
ग्यारह सहस आठ सौ भाई, शिक्षक बतलाए शिवदायी।।39।।
पन्द्रह सौ थे अवधिज्ञानी, डेढ़ सहस थे केवलज्ञानी।।40।।
ग्यारह सौ विक्रिया के धारी, नौ सौ विपुलमती अनगारी।।41।।
आठ सौ वादी मुनिवर गाये, पाँच सौ छत्तिस संग शिव पाए।।42।।
आषाढ़ शुक्ल सातें जिन स्वामी, पद्मासन से शिवपद गामी।।43।।
उर्जयन्त से शिव पद पाए, 'विशद' चरण में शीश झुकाएँ।।44।।

सोरठा - चालीसा चालीस, पढ़े भाव से जो 'विशद'।
चरण झुकाकर शीश, अर्चा करते जीव जो।।
शांति में हो वास, रोग शोक चिन्ता मिटे।
पाप शाप हो नाश, विशद मोक्ष पदवी मिले।।

श्री नेमिनाथ की आरती

तर्ज - भक्ति बेकार है.......

नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं। टेक।।
शौरीपुर में जन्म लिए प्रभु, घर-घर मंगल छाया जी।
इन सुरेन्द्र महेन्द्र सभी ने, प्रभु का न्हवन कराया जी।।
नेमिनाथ दरबार है... ।।1।।
नेमिकुंवर जी ब्याह रचाने, जूनागढ़ को आये जी।
पशुओं का आक्रन्दन लखकर, उनको तुरत छुड़ाए जी।।
नेमिनाथ दरबार है... ।।2।।
मन में तब वैराग्य समाया, देख दशा संसार की।
राह पकड़ ली तभी प्रभु ने, महाशैल गिरनार की।।
नेमिनाथ दरबार है... ।।3।।
पंच मुष्टि से केशलुंच कर, भेष दिगम्बर धारे जी।
कठिन तपस्या के आगे सब, कर्म शत्रु भी हारे जी।।
नेमिनाथ दरबार है... ।।4।।
केवलज्ञान जगाकर प्रभु ने, जग को राह दिखाई जी।
भवसागर को पार करूँ यह, 'विशद' भावना भाई जी।।
नेमिनाथ दरबार है... ।।5।।